प्रातःक्लास 13/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाचः। और कोई का नाम नहीं लिया। अपना नाम भी नहीं लिया। पतित–पावन वह बाप ही है। तो ज़रूर वह आवेंगे यहां पतितों को पावन बनाने लिए। पावन होने की युक्ति भी यहां बतलाते हैं। शिव भगवानुवाचः है न कि कृष्ण भगवानुवाचः। यह तो ज़रूर समझाना चाहिए जब कि बैज पड़ा हुआ है। यह बैज कोई कम नहीं है। इशारे की बात है। तुम सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आस्तिक हो। नम्बरवार तो ज़रूर कहेंगे। कई हैं जो रचयिता और रचना के ज्ञान को नहीं समझा सकते हैं, तो सतोप्रधान बुद्धि थोड़े ही कहेंगे। सतोप्रधान बुद्धि, फिर रजो बुद्धि, तमो बुद्धि भी है। जैसा जो समझते हैं वैसा टाइटिल मिलता है। यह सतोप्रधान बुद्धि है यह तो बुद्धि है। परंतु नहीं कहते हैं। नहीं तो फंक न हो जाये। नम्बरवार तो होते ही हैं। फर्स्ट क्लास की कीमत भी बहुत अच्छी होती है। अभी तुमको सच्चा सद्गुरु मिला है। अंधेला नहीं। गायन भी है ना गुरु जिनके अंधेले चेले सत्यानाश। सभी सत्यानाश हो जाती है; क्योंकि सभी हैं भक्ति मार्ग के गुरु। गाते हैं; परंतु उनका अर्थ नहीं समझते हैं। बाप तुम बच्चों को अर्थ समझाते हैं। गुरु जिसकी(के) अंधेला..... द्वापर से लेकर तुम गुरु करना सीखे हो; परंतु वह रचयिता और रचना के ज्ञान को जानते ही नहीं; इसलिए उनको अंधेला कहा जाता है। गुरु ही अंधेले तो चेले का क्या हाल होगा। तुम चेले हो ना। गुरु बहुत कियें हैं। भक्ति है ही अंधियारा मार्ग। अभी तुम बच्चे जानते हो जबकि सतगुरु मिला है तो तुमको एकदम सच्चा बना देते हैं। सच्चे हैं देवी–देवताएं, जो फिर वाम मार्ग में ही झूठे बन जाते हैं। गुरु भी झूठ तो शास्त्र आदि सभी झूठे। झूठी माया झूठी काया..... सतयुग में सिर्फ़ तुम देवी–देवताएं ही रहते हो। और कोई होते ही नहीं। कोई–2 तो ऐसे अंधेले हैं जो कहते हैं कि यह कैसे हो सकता। ज्ञान नहीं है ना। अभी तुम बच्चे जानते हो अभी हम नास्तिक से आस्तिक बन रहे हैं। रचयिता के और रचना के नॉलेज को तुम.... एक्युरेट जाना है। नाम–नाम रूप से न्यारी चीज़ तो फिर देखने में भी नहीं आती। आक(ा)श पोलार है। तो भी फील किया जाता है ना आकाश है। यह भी ज्ञान है ना। बच्चे अच्छी रीत समझते हैं। सारा मदार बुद्धि पर है। रचयिता और रचना का ज्ञान एक बाप ही देते हैं। रचयिता का नॉलेज तो ज़रूर उनका भी बाप होता जो देगा। बाप तुम बच्चों को इतना ऊँच बनाते हैं जो तुम रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देते हो। यह भी लिखना है कि यहां रचयिता और रचना का ज्ञान मिल सकता है। ऐसे बहुत स्लोगन हैं। दिन–प्रतिदिन नये स्लोगन्स नये प्वाइन्ट्स निकलते रहेंगे। आस्तिक बनने लिए रचयिता और रचना का ज्ञान ज़रूर चाहिए। फिर नास्तिकपना छूट जाता। तुम आस्तिक बन विश्व का मालिक बन जाते हो। यहां तुम आस्तिक हो। रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते हो; परंतु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जानना तो मनुष्यों को ही है। जनावर तो नहीं जानेंगे। मनुष्य ही बहुत ऊँच और बहुत नीच बनते हैं। इस समय कोई भी मनुष्य रचयिता और रचना के नॉलेज को नहीं जानते हैं। बुद्धि पर एकदम गॉडरेज का ताला लगा हुआ है। तुम जानते हो। वह भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अभी तुम रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को अच्छी रीत समझ(ते) हो। सामने टीचर बैठा हुआ है। यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। तुमको तो अभी सच्चा सद्गुरु (मिला) है। तुम जानते हो बाप के पास हम विश्व का मालिक बनने आये हैं। तुम 100% पवित्रता में रह(ते) हो। पवित्रता भी है, शांति भी है, सुख भी है। आशीर्वाद देते हैं ना; परंतु यह अक्षर हैं भक्ति मार्ग के। यह ल.ना. तो तुम पढ़ाई से बनते हो। सबको पढ़ाना है। स्कूल में कुमारियां जाती हैं पढ़ने लिए। जहां सिर्फ़ कुम..... होती है। इकट्ठे होने से खराब भी हो पड़ते हैं; क्योंकि क्रिमिनल आई है ना। क्रिमिनल आई होने कारण पद ..... थे। वहां तो क्रिमिनल आई होती ही नहीं। तो पर्दा लगाने की भी दरकार नहीं। इन ल.ना. को कब पद ..... देखा है क्या। वहां तो कब ऐसे गंदे ख़्यालात भी नहीं आते। यहां तो है रावण राज्य। यह आँखें बड़ी शैतान हैं। बाप आकर ज्ञान की चक्षु देते हैं। आत्मा ही सब कुछ सुनती है, बोलती है। सब कुछ करती है अ.....

तुम्हारी आत्मा अभी सुधर रही है। आत्माएं बिगड़कर पापात्मा बन गई थीं। पापात्मा उनको कहा जाता है (जिनकी) क्रिमिनल दृष्टि होती है। वह क्रिमिनल आई तो सिवाय बाप के और कोई सुधार न सके। ज्ञान से सिविल ..... चक्षु एक बाप ही देते हैं। यह ज्ञान भी तुम जानते हो। शास्त्रों में यह ज्ञान थोड़े ही रखा है। बाप कहते (है) यह वेद–शास्त्र–उपनिषद आदि सभी भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। जप–तप–तीर्थ आदि करने से मुझे कोई नहीं ..... हैं। यह भक्ति है। जो आधा कल्प चलती है। मनुष्य नीचे उतरते–2 एकदम गिर जाते हैं; परंतु यह समझ ..... कि हम भक्ति करते–2 नीचे उतरते आये हैं। अपना बड़ा अहंकार है। हम भक्त हैं, माला जपते हैं बाहर से है ..... अंदर ठगत। अब तुम बच्चों को सभी को यह संदेशा देना है आओ तो ..... तुमको रचयिता और रचना के (आदि), मध्य, अंत का ज्ञान सुनावें। परमपिता परमात्मा की वायोग्राफी बतावें। मनुष्य मात्र तो बिल्कुल जानते ..... हैं। मुख्य अक्षर है यह। आओ बहनों और भाईयों आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान ..... पढ़ाई पढ़ो। जिससे तुम यह बनेंगे। यह ज्ञान पाने से और सृष्टि चक्र को समझने से तुम ऐसे चक्रवर्ती सत(युग) के महाराजा और महारानी बन सकते हो। यह ल.ना. भी इस पढ़ाई से बने हैं। तुम भी पढ़ाई से बन ..... हो। इस पुरुषोत्तम संगमयुग का बहुत प्रभाव है। बाप आते भी हैं भारत में। दूसरे कोई खण्ड में क्यों आ..... बाप है अविनाश(ी) सर्जन। तो ज़रूर आवेंगे भी वहां ही जो भूमि सदैव कायम रहती है। जिस धरती पर भगवान का पांव लगा वह धरती का विनाश हो नहीं सकता। यह भारत तो रहना ही है ना। देवता..... लि... सिर्फ़ यह बदली होता है। बाकी भारत जो है सच्च खण्ड। झूठ खण्ड भी भारत ही बनता है। भार(त) (का) ही ऑलराउड पार्ट है। और कोई खण्ड को ऐसे नहीं कहेंगे। सच्चा और ट्रुथ भगवान ही आकर सच्च खण्ड ..... हैं। फिर झूठ खण्ड रावण बनाती है। फिर सच्च की रत्ती नहीं रहती; इसलिए गुरु भी सच्चे नहीं मिलते। अभ(ी) समझते हो गुरु जिनके अंधेले.. वह भी पूरे अंधेले हैं। वह सन्यासी तो, फॉलोवर्स गृहस्थी। उनको फॉलो कैसे कहेंगे। अभी तो बाप खुद कहते हैं बच्चे पवित्र बनो और दैवी गुण धारण करो। तुमको अभी देवता (बनना) है। सन्यासी कोई सम्पूर्ण निर्विकारी थोड़े ही हैं। घड़ी–2 विकारियों पास जाकर जन्म लेते हैं। कई बाल ब्राह्मचारी होते हैं। ऐसे तो बहुत ही हैं। विलायत में भी बहुत हैं। बूढ़े होते हैं तो शादी करते हैं सम्भाल के लिए उनके लिए धन छोड़कर भी जाते हैं। बाकी धन धर्माउ कर देते हैं। यहां तो उनका बच्चों में बहुत ममत्व है। जांच रखते हैं हमारे बच्चे पिछाड़ी में ठीक चलाते हैं या नहीं; परंतु आजकल के बच्चे तो ..... हैं बाप वानप्रस्थ में गय तो अच्छा हुआ। चाभी तो मिल गई। जीते जी सारा खाना ही खराब कर देते हैं। फिर बाप को भी कहने लगते हैं यहां से निकल जाओ। तो बाप समझाते हैं प्रदर्शनी में तुम यह लिख ..... कि बहनों और भाईयों आकर रचयिता के और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान सुनो। इस सृष्टि चक्र .... को जानने से तुम चक्रवर्ती देवी–देवता विश्व के महाराजा–महारानी बन जावेंगे। यह बाबा बच्चों को..... देते हैं। तो सद्गुरु एक ही है बाकी सभी अंधेले गुरु। सतयुग, त्रेता में तो गुरु की दरकार ही नहीं रहती ..... जन्मों के लिए तुमको सद्गति मिल जाती है। फिर आधा कल्प के बाद गुरु मिलते हैं। अंधेले फॉलोवर्स ..... हो जाती। तुम्हारी सत्यानाश हुई है ना। यह बाबा भी कहते हैं हमने 12 गुरु किये सत्यानाश हो तमोप्रधान बन बड़े। अब बाप कहते हैं यह है बहुत जन्मों के अंत क जन्म। मैं इनमें ही प्रवेश ..... ब्रह्मा के सामने है विष्णु। विष्णु को 4 भुजाएं क्यों देते हैं। वह है दो मेल की दो फीमेल की। यहां ..... वाला कोई मनुष्य थोड़े ही होता है। यह समझाने लिए है। विष्णु अर्थात् ल.ना.। दो भुजा उनकी औ.... और ब्रह्मा को भी दिखाते हैं दो भुजा ब्रह्मा की, दो भुजा सरस्वती की। दोनों ही बेहद के ..... गये। ऐसे नहीं कि सन्यास कर कोई दूसरे जगह चले जाना है। नहीं। बाप कहते हैं गृहस्थ (व्यवहार में) रहते नर्क को बुद्धि से त्याग कर दो। नर्क को भूल स्वर्ग़ को याद करना है। नर्क को पुरानी दुनिया (स्वर्ग़ को नई)

दुनियां कहा जाता है। नर्क और नर्क वासियों से बुद्धियोग हटाकर स्वर्ग़वासी देवताओं से बुद्धियोग लगाना है। ये पढ़ते हैं तो बुद्धि में रहता है ना हम पास करेंगे फिर यह बनेंगे। गुरु लोग क्या बनाते हैं। हमारी और भारत की और ही सत्यानाश कर दी है। आगे गुरु करते थे जबकि वानप्रस्थ अवस्था होती थी। बाप कहते हैं मैं भी उनकी वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रवेश करता हूँ। जो बहुत जन्मों के अंत के जन्म में है। 84 जन्मों का चक्र लगाते सत्या ही नाश हो गई है। अंधे ऐसे बन पड़े हैं जो कुछ भी समझते थोड़े ही हैं। कहने लग पड़ते हैं। यह अपन को भगवान कहते हैं, फलाना कहते हैं। अरे इनमें तो साफ लिखा हुआ है भगवानुवाचः मैं बहुत जन्मों के अंत वाले जन्म में ही प्रवेश करता हूँ। जिसने शुरू से लेकर अंत तक पार्ट बजाया है। इसमें ही प्रवेश करता हूँ; क्योंकि इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। ब्रह्मा सो विष्णु। विष्णु सो ब्रह्मा। दोनों को 4 भुजाएं देते हैं। हिसाब भी है ब्रह्मा सरस्वती सो ल.ना., फिर ल.ना. सो ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। तुम झट यह हिसाब बतलाते हो। विष्णु अर्थात् ल.ना. 84 जन्म लेते–2 फिर आकर साधारण यह ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। इनका नाम भी बाद में बाबा ने ब्रह्मा रखा है। नहीं तो ब्रह्मा का बाप कौन? ज़रूर कहेंगे शिवबाबा। कैसे रचा? एडॉप्ट किया। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। तो सिद्ध हुआ ना। लिखना चाहिए शिव भगवानुवाचः। मैं ब्रह्मा में प्रवेश करता हूँ जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में मैं प्रवेश करता हूँ। वह भी जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तब आता हूँ। और जब दुनियां पतित पुरानी हो जाती है तब ही आता हूँ। कितना सहज बतलाते हैं। गायन भी है धृतराष्ट्र के औलाद अंधे..... भारत की कितनी सत्यानाश हो गई है। सत्यानाश किसने की? गुरुओं ने। आगे 60 वर्ष में गुरु करते थे। अभी तो जन्म से ही गुरु कर .... देते हैं। यह सीखे हैं क्रिश्चियन से। अरे, छोटेपन में गुरु कराने की दरकार ही क्या। समझते हैं छोटे पन में ही मरेंगे तो सद्गति को पा लेंगे। बाप समझाते हैं यहां तो कोई भी सद्गति हो न सके। तुम्हारे गुरु लोग अंधे थे। तो सत्यानाश हो पड़े। अभी बाप तुमको कितना ऊँच बनाते हैं। भक्ति में तुम सीढ़ी उतरते ही आये हो। रावण राज्य है ना। विषय दुनियां शुरू हो जाती है। गुरु तो सभी ने किया। यह खुद भी कहते हैं हमने गुरु बहुत किया। ऐसी–2 बातें सुनाई जो गालियां ही गालियां हैं। भगवान जो सभी की सद्गति करते हैं उनको गा(लियां) ही गालियां। भगवान जो सभी की सद्गति करते हैं उनको ही गाली देते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। कुत्ते, बिल्ले, उल्लू, गधे सभी में है। इससे भी पेट नहीं भरा तो फिर ईडियट पने की गाली देने लगे ठिक्कर–भित्तर में परमात्मा है। बाप कहते हैं ऐसे जो बन जाते हैं तो चेलों की भी सत्यानाश तो गुरुओं की सत्यानाश हो जाती है। हिरण्यकश्यप बन जाते हैं कि हम ही ईश्वर के रूप हैं। माताएं उनकी पैर धो–धोकर पीती हैं। इतना सुनते हैं तो भी गुरुओं की पीछ(ा) नहीं छोड़ते। बहुत जज़ीरें पड़ी हुई हैं। जज़ीरें को(ई) बहुत मोटी होती हैं तो कोई पतली होती है। कोई भारी चीज़ उठाते हैं तो कितनी मोटी जंज़ीर उठाते हैं। इनमें भी ऐसे हैं। कोई तो आकर तुम्हारा सुनेंगे। अच्छी रीत पढ़ेंगे। कोई समझते ही नहीं। नम्बरवार माला की दाना बनती है। मनुष्य भक्ति मार्ग में माला सिमरते हैं। ज्ञान पाई का भी नहीं। गुरु ने कहा माला फेरते रहो। बस राम–राम की धुन लगा दे.... हैं। जैसे कि बाजा बजता है। आवाज़ बड़ा ही मीठा लगता है। बस। बाकी जानते कुछ भी नहीं। राम किसको क(हा) जाता, कब आते हैं कुछ भी नहीं जानते। कृष्ण को भी द्वापर में ले गये हैं। यह किसने सिखाया? गुरु(ओं) ने। कृष्ण ने द्वापर में गीता सुनाई फिर उससे क्या हुआ? द्वापर के बाद तो कलयुग आया। तमोप्रधान ..... बाप कहते हैं मैं संगम पर ही आकर तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाता हूँ। तुम तो कितने अंधश्रद्धालु बन पड़े हो। भक्ति से दुगर्ति को पा लिया है। बाप समझाते हैं जो काँटे से फूल बनने वाले होंगे (वह) झट समझ जावेंगे। कहेंगे यह तो बिल्कुल सत्य बात है। कोई–2 लोग अच्छी रीत समझते हैं तो ..... तुम बहुत अच्छ(ा) समझाते हो। 84 जन्मों की कहानी भी बरोबर है। ज्ञान का सागर तो एक .....

ही है। वह एक ही बार आते हैं पतित दुनियां को पावन बनाने। ऐसे बाप को फिर कितनी गाली देते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, परशुराम अवतार। परशुराम ने कुल्हाड़ा उठाया। सभी मी रा (सभी को मारा) यह किया। असत्य बात(ों) को सत्य–2 करते–2 असत्य ही बन जाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो वह है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग, ज्ञान सुनाने वाला तो एक ही ज्ञान सागर है। उनकी महिमा गाई जाती है। देवताओं अथवा मनुष्यों (की) वह महिमा हो न सके। वह है ही मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। चैतन्य है ना। सत्य है, चैतन्य है। तो महिमा करते हो ना। शान्ति का सागर है, सुख का सागर है..... सभी का वह सागर है। वह आकर तुम बच्चों को सभी कुछ बताते हैं कि मैं कौन हूँ। दिल से लगे तब जब कि कुछ मिले ..... अभी तुमको दिल से गलता है। गुरु को कब बाबा वा टीचर नहीं कहा जाता। तुम्हारे पास बहुत बुद्धू बुद्धि आते हैं जो कुछ भी समझते नहीं। समझाया भी जाता है कि वह बेहद का बाप भी है, टीचर भी (है), रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देते हैं। सच्चा सद्गुरु भी है। जो सभी को ले जाते हैं श(ांतिधाम)–सुखधाम। शिवबाबा आते ही हैं रात्रि में। गाया भी जाता है ब्राह्मणों का दिन सो ब्रह्मा का दिन। (ब्राह्मणों) की रात सो ब्रह्मा की रात। अभी है रात। भक्ति मार्ग का अंत है। रात में धक्के बहुत खानी पड़ती हैं। भगवान को ढूँढ़ने लिए पहाड़ों पर, तीर्थों पर इधर–उधर कितना भटकते हैं। वहां क्या रखा हुआ है, कुछ भी नहीं। महिमा बहुत कर देते हैं। जैसे स्वामी राम तीर्थ के लिए कहते हैं, वह जंगल में जाते थे। उनमें ताकत थी। ब्रह्म में लीन होने लिए माथा मारते हैं। बाप समझाते हैं– ब्रह्म में लीन होने की तो बात ..... उनको यह पता नहीं है कि जो भी एक्टर्स हैं यह सभी का पार्ट अविनाशी है। ड्रामा के अविनाशी एक आत्मा में ही सारा 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। कितने वण्डरफुल बातें हैं। कुदरत है ना। इतनी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, जो कभी मिट नहीं सकता। यह बातें बाप ही सुनाते हैं। ..... अविनाशी चक्र फिरता ही रहता है। कोई नई आत्मा नहीं बनती है। आत्मा में पार्ट भरा हुआ है ..... जो ..... ही रहते हैं। 84 जन्मों के बाद फिर यह ल.ना. बनते हैं। तुम यहां आये ही हो फिर से ल.ना ..... हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। क्राइस्ट बुद्ध आदि सभी अपने–2 समय पर आ जावेंगे। यह है बेहद ..... जो बाप ही समझाते हैं। पहले–2 है ल.ना0 ही फर्स्ट। प्रजा भी थोड़ी ही होती है। फिर वृद्धि को ..... गाते भी हैं ना फ़कीरा नु साहब..... तुम सभी फ़कीर हो ना। तुम्हारे पास कुछ भी है नहीं। ..... ही खाली हो। तुम फ़कीर ठहरे। उन फ़कीरों पास तो 5 हज़ार/10 हज़ार निकल आते हैं। ज..... जांच करती है। तुम पूरे फ़कीर फिर पूरे अमीर बनते हो। जो पूरे फ़कीर नहीं बनते हैं पूरे अमीर भी ..... अभी तुम फ़कीर हो ना। बाप कहते हैं हम तुम्हारी मिलकियत को क्या करेंगे। तुमको ही ट्रस्टी (बन) कहते भी हैं यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया। अच्छा, उसने दिया था फिर उसने ही ले लिया तो फिर ..... क्यों मचाते हो। अच्छा।

आज गुरुवार है। बृहस्पत वृक्षपति की दशा हो जाती है। बृहस्पती की दशा है ऊँच ते ऊँच ..... भी अभी बहुत ऊँच ते ऊँच दशा है। स्वर्ग़ में तो ज़रूर आवेंगे। जो थोड़ा भी ज्ञान सुनते हैं तो स्वर्ग़ (में ज़रूर) आवेंगे। बच्चों को रेसे करनी चाहिए। आप समान बनाते जाओ। सर्विस करते जाओ। जो सर्विसएबुल ..... उनसे रेस करो। मंदिरों में जाकर सर्विस करो। तुम पैगम्बर हो ना। क्राइस्ट बुद्ध आदि पैगम्बर थोड़े ..... भी बाप का पैगाम नहीं लाते। बाप ही आकर पैगाम देते हैं। जो तुम सभी को देते हो। बोलो बाप ..... तुम आत्मा हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए तुम मुझे याद करो, तो पाप भस्म हो जावेंगे .... करने, गंगा स्नान करने से और ही पाप चढ़ते हैं। वह तो गंदा पानी है, जिनमें जना(वर) ..... किचड़ा रहता है। उनको फिर कहते हो पतित–पावनी है। इतने अंधे बन गये हो। अच्छा, ...